रात्रिक्लास 12.4.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बाप कहते हैं मनमनाभव। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध को छोड़ मामेकं याद करो। तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। तुम सतोप्रधान बन फिर राज्य करेंगे। तुम राज्य करते थे; परन्तु भूल गये हो। तो बाप कहते हैं फिर तुम बच्चों को सुनाता हूं। अभी वापस चलना है। मुझे याद करो तो पावन बनेंगे। 84 का चक्र भी सुनाया। अभी इन जैसे दैवीगुण धारण करो तो विश्व के मालिक बन जावेंगे। शिवबाबा भण्डारा भी भरपूर करते हैं। तो खुशी में बहुत रहना चाहिए। फालतू बातें न सुननी चाहिए। बाप कहते हैं मैं जो सुनाऊँ वह सुनो। झरमुई–झगमुई न सुनो। कान बन्द कर दो। और तो बाबा मेहनत देते नहीं हैं। हां, विकार के लिए तंग भी करते हैं। यह तो आसुरी सम्प्रदाय का काम ही है। फीमेल्स को तंग करते हैं। फीमेल मेल को कम तंग करतीं हैं। तो अभी विकार से बचना है। जबरदस्ती करते हैं तो उनका दोष है। तुम लाचार हो पड़ती हो। अब ज़रा भी खवास(ख्वाइश) न हो। जीतना है काम को। क्रोध को नहीं। काम पर जीत पानी है। बेहद का बाप कहते हैं काम को जीतो तो जगत जीत बनो। शिव को न माने, कृष्ण को माने; परन्तु मुख्य बात है काम पर जीत पहन जगत जीत बनो। यह जगतजीत है ना। इन्होंने कोई लड़ाई नहीं की। यह है पवित्रता की ताकत। मुख्य है पवित्रता। बाबा के साथ योग लगाने से पवित्र बन जावेंगे। जो सुनते हैं उनको दिल से लगता है। फिर कब नीचे, कब ऊपर होते हैं। इसमें दैवीगुण भी चाहिए। आसुरी गुण होंगे तो तंग करेंगे। दो फीते एक समान नहीं होते हैं। तुम जैसे वनवा में हो। ज़ेवर आदि कुछ भी नहीं पहनते हो। इन चीज़ों से दिल नहीं लगती है। बुद्धियोग ज़ेवर आदि में चला गया तो (गिर) पड़ेंगे। सारी दुनियां से वैराग्य। तुम आत्मा अकेला हो गया। वैराग्य आता है तो सभी कुछ त्याग करना होता है। यह है पुरुषार्थ करना। अकेले आये, अकेले जाना है। जाना भी है याद करते; क्योंकि पतित है तो पावन बनना है। यह तो बहुत ही सहज है। पुकारते भी हैं आकर हमको पावन बनाओ। पानी की नदियां तो सतयुग में होती हैं। वहां ..... में ..... है। यहां बेअदबी है। तो अभी बाप तुमको सुखधाम का मालिक बनाते हैं। बनना भी जरूर है। दुःखधाम से जाना है शान्तिधाम। याद भी करो तो पवित्र भी रहो , कोई तकलीफ नहीं। दो बाप तो ज़रूर बताओ। तीसरे बाप से तो कुछ भी नहीं मिलता। सिर्फ़ उन(से) मिलता है। इनसे कुछ मिलने का नहीं हैं। बाप बच्चों को एडॉप्ट भी करते हैं। यह जैसे बीच में दलाल है। दलाल तो मिलेंगे ना। सौदा कराते हैं ना। पैसे की तो बात ही नहीं। तुम सभी को रास्ता बताते हो। जितना जो बहुतों को शान्तिधाम–सुखधाम का रास्ता बताते हैं उतना बहुत फायदा मिलता है। बच्चे बैठे हैं। बुद्धि में है (घर) जाना है। बाबा आया हुआ है, घर ले चलते हैं। बच्चों में गुप्त खुशी होनी चाहिए। बाकी बाबा बच्चों के मददगार तो बनते ही हैं। तो बाप प्यार से देखते हैं। जो जास्ती बहुतों को रास्ता बताते हैं वह आत्मा जास्ती याद रहती है। बाप उनको याद करते हैं। तो उनको भी बाप की कशिश होती है। पाप कट जावेंगे। बाप अपने तरफ खैंच कर ले आते हैं। पवित्र बनने की मेहनत है। बाप आकर भटकने से छुड़ाते हैं। भटकने को अंधियारा रात कहा जाता है। चार्ट भी सच्च लिखना है। बाप को याद करना गोया घर और राजाई की याद करना है। वर्सा तो याद ही है। ऐसी बातें और कोई समझाते नहीं। एक ही सत का संग मिलता है। बाबा–2 करते रहो। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है; इसलिए बाबा ने कहा था कि प्रभातफेरी में यह बताओ हम पीस स्थापन कर रहे हैं श्रीमत पर। परमपिता परमात्मा बिगड़(र) कोई भी शान्ति स्थापन कर न सके। कुम्भकरण के नींद से जागो। विनाश खड़ा है। नहीं तो टू लेट हो जावेंगे। सभी स्लोगन बोलो। ब्राह्मण याद की यात्रा में रहते हैं। यह है रूहानी यात्रा। सुप्रीम बाप को याद करना है। सच्चमुच अपने घर पहुँच जावेंगे। तुम जानते हो भक्ति अभी पूरी होती है। हम हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। जितना याद में रह किसको सुनावेंगे। अपन को बाप का बच्चा समझो। हम भाईयों को बताते हैं। ऐसे समझेंगे तो बल मिलेगा। बाबा ने युक्तियां तो बहुत बताई हैं। बच्चे घंटा बैठते हैं। जितना देही अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करेंगे तो कर्म इन्द्रियां बस हो जावेंगी। कर्म इन्द्रियों को बस करने का उपाय ही है याद का। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट।